धनतेरस पर ऐसा क्या करें कि लक्ष्मी वापस जाने का सोचे भी नहीं?

धनतेरस जैसा कि नाम से मालूम चलता है कि इस तिथि का धन से बहुत बड़ा संबंध है। यदि आपके भाग्य तेज है, किस्मत प्रबल है तो पैसे की आवक पूरी रफ्तार से बढ़ती है। हम धनतेरस की शाम को दीपक जलाते हैं। नरक चतुर्दशी अर्थात् रुप चौदस को भी दीपक जलाते हैं। लेकिन संख्या धनतेरस से ज्यादा होती है और दीपावली को तो घर का कौना-कौना जगमगाता है। लेकिन धनतेरस पर आपको किसी ने संख्या नहीं बताई, कि पहले दिन कितने दीपक लगाने चाहिए और कब? अगर इसे पूरे तरीक से समझ लिया जाए तो समझो हो गए वारे-न्यारे। तेरस यानी संख्या 13, अब इस संख्या 13 से ही जुड़ा एक अचूक प्रयोग आपको बताया जा रहा है। सबसे पहले शाम के समय पूजा कक्ष में एक लाल वस्त्र बिछाकर उस पर थाली रख दें। थाली में स्वास्तिक बनाएं, अब 13 दीपक जलाएं, इन दीपकों पर कुंकुंम की छोटी-सी बिंदी लगाएं, पुष्प की पंखुड़ियाँ चढ़ाएं और एक-एक करके सारे दीपक थाली में रख दें। पूरे परिवार को कहें कि इन दीपक को हाथ जोड़े और परिवार के प्रत्येक सदस्य से दीपक घर के बाहर की तरफ रखवाएं। अक्सर हमारा भाग्य दस्तक देता है किस्मत कहीं ओर पहुंचाना चाहती है लेकिन बुरी नजर के प्रभाव के कारण हमारी किस्मत हमेशा श्रापित रहती है।

क्या आपको जीवन में एक बार भी ऐसा नहीं लगा कि आप जितनी मेहनत कर रहे हैं उसके अनुसार आपको रिजल्ट नहीं मिल पा रहा है। ऐसा क्यों? क्या सिर्फ कर्म का ही प्रभाव है? नहीं श्रीमान् कुछ कलुषित मन के लोग आपके हुनर पर हमेशा नजरें गढ़ाएं बैठे रहते हैं। जिनका प्रभाव आप पर पड़ता है।

जो प्रयोग बताया गया है, इस प्रयोग में याद रहे कि दीपकों की ये पूजन प्रक्रिया शाम के समय ही करनी है। जब पूरी तरह से अंधरेा ना हुआ हो यानि की प्रदोष वेला पर। फिर उसके बाद जब एक निश्चित अवधि पर दीपक स्वतः ही बुझ जाएं तो एक कटोरी लेकर जो तेल उन सब दीपकों में बचा हुआ है। उसे घर के पास किसी पीपल के पेड़ में डालकर आ जाएं और पीपल में स्थित त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश से प्रार्थना करें कि हे प्रभु! हमारे ऊपर बुरी नजर के जो भी प्रभाव हैं। उन्हें हटाएं और हम पर अपनी कृपा बनाएं रखें।

इस बार मना लें स्वास्थ्यर्वधक तेरस-

धनतेरस में पहला शब्द है धन साथ ही आयुर्वेद ज्ञाता धनवंतरि के नाम का पहला शब्द भी धन से ही जुड़ा हुआ है। यदि आप निरोगी हैं तो सारे सुखों का उपभोग कर सकते हैं लेकिन वहीं रोगों से परेशान हैं तो क्या स्थिति होगी, मिठाइयाँ रखी हुई है और डायबिटीक है, पलंग सोने का है लेकिन डॉक्टर ने कहा है कि आपको जमीन पर चटाई बिछाकर ही सोना चाहिए। वैसे ही पैसा बहुत है वर्ल्ड टूर कर सकते हैं लेकिन ब्लड प्रेशर कब शूटअप हो जाएगा ये कह नहीं सकते तो सारे टूर हॉस्पीटल तक ही सीमित रहेंगे। वर्ल्ड की बात तो बहुत दूर रही अपना शहर भी घूमना पॉसिबल नहीं होगा। यानि सारे सुखों के ताले की चाबी है अच्छा स्वास्थ्य।

यदि आप भी निरोगी रहना चाहते है तो इस बार धनतेरस पर बहुत ही आसान और सरल विधि बताई जा रही हैं, जिसे आपको जरुर करना चाहिए।

ऐसा माना जाता है कि भगवान धनवंतरि जब पैदा हुए थे उनके हाथ में कलश था जो कि अमृत से भरा हुआ था। इस दिन आप भी चांदी का कलश खरीदिए। चांदी के कलश के पीछे क्या कारण है वो मैं आपको बताता हूं। चांदी धातु है चन्द्रमा का और चन्द्रमा मन-मस्तिष्क का स्वामी है और शीतलता का कारक है। साथ ही चांदी सारे धातुओं में सबसे अधिक शीतल मानी गई है। यदि ऐसी ही शीतलता मन में स्थापित हो तो मन में संतोष रहता है। आप किसी से ईर्ष्या नहीं करते, मन में कटुता नहीं आती, हमेशा उमंग और उत्साह बना रहता है और किसी के कुछ भी कहने से कोई फर्क नहीं पड़ता। अब चांदी का कलश या पात्र को हम लोग अमूमन खरीदते आएं हैं। फिर बीमारियां क्यों घर करती है? इसके पीछे कारण ये है कि हम सिर्फ कलश खरीद कर रख लेते हैं। आगे का विधि-विधान हमें मालूम नहीं है। वैज्ञानिक स्तर पर हम सभी जानते हैं कि चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है और फिर उसे धरती पर प्रतिबिम्बित करता है और इन दोनों प्रकाश ग्रहों के सहारे ही जीवन चलता है। आप कलश लेकर आएं और चांदी जो कि चन्द्रमा का कारक है। अब चांदी के कलश में पानी लीजिए और दोपहर के समय छत पर चले जाइए। सूर्यदेव जिस दिशा में हो उस दिशा की तरफ मुंह करके खड़े हो जाएं, पांच बार "ऊँ चन्द्रमसे नमः" मंत्र का जाप करें और पांच बार "ऊँ घृणी सूर्याय नमः" मंत्र का जाप करें। अब इस जल को कुछ देर के लिए पूजन कक्ष में रखें और फिर उचित मात्रा में ये अमृतरुपी जल परिवार के प्रत्येक सदस्य को ग्रहण करवाएं। गंभीर रोगों से मुक्ति के साथ शीतलता और तेज आपके व्यक्तित्व में समान रुप से स्थापित होंगे और ये धनतेरस स्वास्थ्यवर्द्धक तेरस के रुप में आपके शरीर को निरोगी करेगी।

स्वास्तिक स्थापना-

आप अपने घर के कौनसे हिस्से को सबसे ज्यादा सजाकर यानि Lavish style में रखते हैं। स्वाभाविक है ड्राइंग रुम। ये स्वास्तिक यंत्र भी आपको

धनत्रयोदशी के दिन संध्या समय में ड्राईंग रुम में स्थापित करना है। नीचे लाल कपड़ा बिछा हो तो बहुत ही बेहतर। मकान जिसमें आपका निवास होता है, उसे घर बनाती है गृहणी और ये गृह हमेशा गृहिणी का ऋणी ही रहता है। यानि घर का भी सौभाग्य दमकता है गृहिणी की वजह से। माँ, पत्नी, बेटी, बहन, सलाहकार और संसार के ममता और वात्सल्य से भरे सारे रुप समेटे होती है एक महिला। इस स्वास्तिक यंत्र को स्थापित करवाने के बाद गृहिणी को कुछ-न-कुछ सोने, चांदी या वस्त्र के रुप में कुछ उपहार जरुर दिलवाएं। ये धनतेरस मंगलकारी हो, त्यौंहार की शुरुआत का पहला दिन जब आनन्दित करने वाला होगा तो प्रत्येक दिवस खुशियों की लहर लेकर आएगा। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ धनतेरस आप सभी के लिए शुभमय हो।

गृहणी से बनवाएं स्वास्तिक यंत्र, चारों दिशाओं से होगी पैसों की बरसात-

अमूमन प्रत्येक त्यौहार पर महिलाएं पूजन कक्ष में या घर के बाहर कुंकुम से स्वास्तिक बनाती है। नींव का मुहूर्त्त हुआ तो स्वास्तिक, गृहप्रवेश पर भी स्वास्तिक, नई-नवेली दुल्हन घर पर आई तो सबसे पहले मटकी रखने वाले स्थान पर बनवाया जाता है स्वास्तिक। एक तरह से सनातन धर्म में सबसे प्रमुख यंत्र स्वास्तिक को ही माना गया है। धनत्रयोदशी, पंचदिवसीय महापर्व की शुरुआत का दिन। इस दिन आपको गृहिणी के द्वारा एक विशेष तरीके से स्वास्तिक बनवाना है। यदि इस तरह आपने स्वास्तिक बनवाया तो समझिए चारों दिशाओं से अनंत द्वार धन वर्षा करेंगे। आप में से ज्यादातर लोग ये सोचते है कि स्वास्तिक मध्य से शुरु होकर एक दिशा के अंतिम छोर तक जाता है, जबकि यदि आप थोड़ी सोच बदलकर देखें तो ये पाएंगे कि वो चारों अंतिम छोर जो चारों दिशाओं से आते हैं, एक केन्द्र बिंदु पर आकर मिलते हैं। जिस तरह प्लस का साइन होता है, जो कि जोड़ता है। हिन्दी भाषा में जिसे योग भी कहते है और संस्कृत में जिसे धन की संज्ञा दी गई हैं। पुराने जमाने में लोग सिर्फ स्वास्तिक के केन्द्र बिन्दु पर ही ध्यान केन्द्रित करके साधनाओं के अनंत छोर तक पहुंच जाते थे और उस घर में हमेशा सुख-शांति और समृद्धि का वास रहता था। इस बार धनतेरस पर संध्या समय में महिलाओं को यह स्वास्तिक बनाना है। सबसे पहले आप आम की लकड़ी का पट्टा लेकर आइए। यदि आम की लकड़ी ना मिल पाए तो कोई भी लकड़ी लीजिए, उस पर प्लाई लगवा दीजिए और अब शुद्धिकरण मंत्र द्वारा उस लकड़ी के पट्टे को शुद्ध कीजिए और कुमकुम के द्वारा अब उस पट्टे पर स्वास्तिक बनाइए। स्वास्तिक आपको बायें हाथ की अनामिका अंगुली द्वारा उकेरना है। अब कुछ अक्षत इस स्वास्तिक यंत्र पर चढ़ाइए। मोली या लाल धागा अब इस स्वास्तिक यंत्र पर रख दीजिए। अब भगवान कुबेर जो कि दिग्पाल है, उनसे प्रार्थना कीजिए कि हे! प्रभु ये चारों दिशाएँ आपके आधिपत्य में है, प्रत्येक दिशा का स्वामी हम पर कृपा करें, सुख-शांति और समृद्धि बनाएँ रखें।

धनतेरस छिपकली का शकुन-

प्रायः हर दिन आपको छिपकली देखने में आ जाती हैं, लेकिन धन त्रयोदशी (धन तेरस) को छिपकली का दिखाई देना विशेष शुभ शकुन हैं। धन त्रयोदशी के दिन या रात्रि में किसी दिवार के छत पर पर छिपकली दिख जाए तो अतिशुभ शगुन माना गया है परन्तु आश्चर्य है कि उस दिन छिपकली के दर्शन दुर्लभ हैं। यदि आपको संयोगवश उस दिन छिपकली के दर्शन जो जाएं तो तुरन्त ही उसे प्रणाम करके कुमकुम के छिंटें उछालकर मंगल की कामना करें। सच मानिए उस वर्ष धन की वर्षा आप पर होगी और पूरा वर्ष शुभ रहता हैं।

शरीर पर गिरे छिपकली, तो स्नान करना क्यों है जरूरी?

घर की दीवारों पर आपने छिपकली को जरूर देखा होगा। कभी कभी यह अचानक दीवार से गिर भी जाती है। संयोगवश अगर यह आपके शरीर पर गिर जाए तो कई तरह की आशंकाएं मन में उठने लगती है। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि छिपकली अगर शरीर पर गिर जाए तो तुरंत स्नान कर लेना चाहिए अन्यथा अनहोनी घटनाओं का सामना करना पड़ता है। बड़े-बुजुर्गों का ऐसा कहना उचित भी है क्योंकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह साबित होता है कि छिपकली का शरीर पर गिरना खतरनाक है। इससे रोग की संभावना रहती है।

इसका कारण यह है कि छिपकली 'कार्डेटा समूह' के 'फाइलम' वर्ग की जीव है। इस वर्ग के कुछ जीव अपने शरीर में बने जहर (यूरिएसिड) को अपनी चमड़ी पर जमा कर लेते हैं। इस वजह से यह सुरक्षिभी रहते हैं। जब कभी छिपकली के शरीर पर गिरे तो अपने शरीर का जहर उसकी त्वचा छोड़ देती है। यह जहर बाद में रोम छिद्रों से शरीर के भीतर जाकर घाव का रूप ले लेता है। इसीलिए कहा जाता है कि शरीर पर छूते ही स्नान कर लेना चाहिए। इस संदर्भ में कई जगह पूजा का भी विधान है।

पूजा में तुलसी के पत्ते का होना अनिवार्य है। इसका कारण ये है कि तुलसी में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। प्रसाद के तौर पर तुलसी ग्रहण करने पर घाव होने की आशंका काफी कम हो जाती है।

♦♦♦

टेलिफोनिक कनसल्टेन्सी से जन्म कुण्डली विश्लेषण

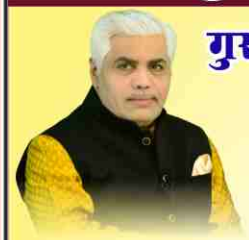

गुरुदेव कमल श्रीमाली द्वारा

भाग्य बदला नहीं जा सकता, लेकिन सुधारा व संवारा जा सकता है। क्या आप भी अपने भविष्य से संबंधित योग-दुर्योग, लाभ-हानि के साथ कई सारी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त करना चाहते हैं।

समय एक सा नहीं रहता, ग्रह-नक्षत्र बदलते रहते है, तो दशा भी बदलती है और इसी के साथ आपकी समस्याएँ भी बदलती है। हर किसी की अपनी-अपनी समस्याएँ होती है और उनका व्यवहारिक समाधान खोजना पड़ता है।

क्या आप गुरूदेव पं. कमल श्रीमालीजी से मिलकर अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करना चाहते है, अपनी जिज्ञासा शांत करना चाहते है।

क्या आप घर बैठे ही श्रीमालीजी से फोन पर परामर्श करना चाहते है... तो अब सुनहरा अवसर है आपके लिये.....
अपना नाम, फोन नं. जोधपुर मुख्यालय में रजिस्टर्ड करवाइये...

सम्पर्क करें:- विश्व तंत्र ज्योतिष

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर(राज.)-342001
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.kamalshrimali.com